بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-29.04.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नसीहतों की रोशनी में अपनी ज़िन्दगियाँ गुज़ारने के लिए एक अज़ीमुश्शान लाह्य-अमल (महान कार्य-पद्यति) का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 29 अप्रैल 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشۡهَدُ أَنۡ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهُ لَا شَرِيۡكَ لَهُ وَ أَشۡهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهُ وَ رَسُوۡلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि रमज़ान आया और उन समस्त लोगों पर जिन्होंने इससे लाभान्वित होने का प्रयास किया, बरकतें बिखेरते हुए गुज़र गया। एक बुद्धिमान तथा वास्तविक मोमिन को सदैव याद रखना चाहिए कि निःसन्देह अनिवार्य रोज़ों का महीना तो पूरा हो गया है किन्तु अन्य कर्त्तव्यों को अदा करने के स्तरों को ऊँचा रखने तथा उनमें उन्नति करते चले जाने का समय शुरु हो रहा है। यदि हम इस यथार्थ को भूल गए कि रमज़ान के बाद हमने अपने कर्त्तव्यों तथा हक़ की अदायगी के स्तरों को किस प्रकार क़ायम रखना है तो हमने अपना रमज़ान उस तरह नहीं गुज़ारा जिस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था।

हमरा सौभाग्य है कि आँज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रत्येक मामले में बड़ा खोल कर हमारा मार्ग दर्शन फ़रमाया है। अपनी जीवन व्यतीत करन के लिए एक कार्य-पद्यति (लाह्ये-अमल) हमें दी है। यदि हम इस कार्य-पद्यति के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करें तो निःसन्देह हम उन रास्तों पर चलने वाले बन जाएँगे जो नेकियों में बढ़ने तथा प्रगति करने के रास्ते हैं, जो एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान को मिलाने के रास्ते हैं, जो इस बीच घटित होने वाली ग़लतियों तथा पापों से बचाने के रास्ते हैं, क्षमा कराने के रास्ते हैं। अतः आपके उपदेशों में से कुछ उपदेश मैं इस अवसर पर बयान करूँगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मोमिनों को बार बार ध्यान दिलाया है कि नमाज़ को छोड़ना इंसान को कुफ्र तथा शिर्क के निकट कर देता है। फिर आप स. फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन सबसे पहले बन्दे से जिस चीज़ का हिसाब लिया जाएगा, वह नमाज़ है। यदि यह हिसाब ठीक रहा तो वह सफल हो गया तथा मुक्ति पा

गया। अतः यह महत्त्व है नमाज़ का, किसी विशेष महीने के लिए ही नहीं बल्कि दिन में पाँच नमाज़ों की ओर ध्यान दिलाया गया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ों के महत्त्व के बारे में हमें बार बार सचेत किया है तथा नसीहत फ़रमाई है। फ़रमाया- अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ कि जबकि इंसान पैदा ही इबादत के लिए हुआ है तो आवश्यक है कि इबादत में उस स्तर का आनन्द तथा सुरूर (मादकता, हर्ष) अवश्य रखा होना चाहिए जिसके लिए पैदा किया गया है। हर चीज़ में आनन्द है तथा उससे मज़ा लेता है इंसान, तो फिर इबादत में क्यूँ नहीं। फ़रमाया कि ख़ूब समझ लो कि इसमें भी एक आनन्द तथा सुरूर (हल्का हल्का नशा) है तथा यह आनन्द तथा सुरूर दुनिया के समस्त आनन्दों तथा अपने मज़ों से उच्च कोटि का तथा उत्तम है।

फ़रमाया जिस का इंसान को पता ही नहीं, जिसकी समस्त संवेदन शक्तियाँ ही मर गई हों वह किस तरह किसी अनुकम्पा तथा उसके आनन्द से लाभावनित हो सकता है। इसके निवारण का भी आपने तरीक़ा बयान किया है। फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला से अत्यंत तपिश और जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस प्रकार फ़लों तथा अन्य चीज़ों को भिन्न भिन्न तरह के स्वाद प्रदान किए हैं, नमाज़ तथा इबादत का भी एक बार मज़ा चखा दे, तभी आनन्द आएगा और जब मज़ा एक बार इंसान को आ जाता है तो फिर उस आनन्द का भी पता चल जाता है, फिर उस ओर ध्यान भी देता है। देखो यदि कोई व्यक्ति किसी सुन्दरता को एक मज़े के साथ देखता है तो वह उसे ख़ूब याद रहता है और फिर यदि किसी कुरूप तथा घृणित अस्तित्व को देखता है तो उसकी पूरी छवि उसके शरीर के अनुसार सामने प्रकट हो जाती है, हाँ यदि कोई सम्बंध न हो तो कुछ याद नहीं रहता। इसी तरह नमाज़ न पढ़ने वालों की दृष्टि में नमाज़ एक बोझ है कि अकारण ही सुबह को उठ कर सर्दी में वज़ू करके, सुन्दर सपनों को छोड़ कर, कई प्रकार की सुख सुविधाओं को छोड़ कर नमाज़ पढ़नी पड़ती है। नमाज़ के मुक़ाबले में उसको नींद तथा सोने में अधिक आनन्द आ रहा है। फ़रमाया- उसको पता ही नहीं है फिर नमाज़ में आनन्द कैसे आए। यदि निष्ठावान मोमिन है कि नमाज़ पर सुदृढ़ रहे, नमाज़ को निरन्तर एवं नियमानुसार पढ़ता चला जाए और पढ़ता जावे, यहाँ तक कि उसको सुरूर आ जावे और जैसे शराबी के मस्तिष्क में एक प्रकार का आनन्दमयी स्वाद होता है जिसको प्राप्त करना उसका मूल लक्ष्य होता है, उसी तरह से मस्तिष्क में और अन्य सभी शक्तियों का रोहजान नमाज़ में उसे सुरूर पाना हो, दुआ भी करे तथा चेष्टा भी करे और फिर एक निष्ठा तथा जोश के साथ कम से कम उस नशा करने वाले की व्याकुलता तथा दर्द की भांति ही दुआ करे कि अल्लाह तआला मुझे सुरूर (नशे का मज़ा) दे कि वह आनन्द प्राप्त हो। आप अलै. फ़रमाते हैं कि- तो मैं कहता हूँ और सच कहता हूँ कि निश्चित ही यदि उस दर्द के साथ दुआ होगी तो आनन्द भी प्राप्त हो जाएगा। अतः उस आनन्द तथा सूरूर को पाने के लिए तथा उस बीमारी से बाहर निकलने के लिए भी दुआ आवश्यक है। केवल अपनी सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए दुआ न हो बल्कि इसके लिए भी दुआ हो। जिस तरह बीमारी से रागमुक्त होने के लिए इंसान हर युक्ति उपयोग में लाता है, उपचार भी करता है, दुआ भी करता है, उसी तरह इसके लिए भी दुआ करे।

कुछ लोग पूछते हैं कि संवार कर नमाज़ें किस तरह पढ़ी जाती हैं, तो यह है संवार कर नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा कि ठहर ठहर कर पूरे समय, हर एक जो हरकत (क्रिया) है नमाज़ की, उसको देकर, पूरा समय लगाकर आराम से पढ़े।

फिर नमाज़ के यथार्थ को समझ कर उसको अदा करने की ओर ध्यान करने के बाद एक मोमिन को क़ुर्आन करोम पर ध्यान देना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हमारी जमाअत को चाहिए कि

क़ुर्आन करीम के काम में लगने और उस पर विचार करने में पूर दिल व जान के साथ व्यस्त हो जाएँ। इस समय क़ुर्आन करीम का शस्त्र अपने हाथ में ले लो तो तुम्हारी विजय है, इस नूर के आगे कोई अंधकार ठहर नहीं सकेगा।

फिर नेकियों को स्थापित करने के लिए आपने यह हिदायत फ़रमाई है कि दीन को हर हाल में दुनिया पर प्रमुख रखो तथा इसके लिए जहाँ ईमान में सुदृढ़ता अनिवार्य है वहाँ ज्ञान की तथा अमल की उन्नति भी अनिवार्य है तथा इसके लिए चेष्टा भी करनी चाहिए।

फिर रमज़ान के फ़ैज़ का जारी रखने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें जो मार्ग दिखाया है, आपस के सम्बंधों में जो उच्च आचरण दिखाने की रमज़ान में हमने कोशिश की थी, उसे जारी रखना, आपस में मुहब्बत तथा भाईचारे को बढ़ाना तथा एक दूसरे के हक़ अदा करना। आप अलै. फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत हरी भरी नहीं होगी जब तक आपस में सच्ची सहानुभूति न करें। फ़रमाया कि हमारी जमाअत में हमें पहलवान नहीं चाहिएँ बल्कि ऐसी शक्ति रखने वालों की आवश्यकता है जो शिष्टाचार के बदलाव के लिए कोशिश करने वाले हों। अतः रमज़ान में जो तक़्वा पैदा किया है उस तक़्वे का तक़ाज़ा भी यही है कि आपस के सम्बंधों को भी मधुर से मधुर बनाया जाए तथा एक दूसरे से व्यवहार में भी शिष्टाचार तथा सुन्दर नैतिकता का नमूना दिखाया जाए।

फिर आप अलै. फ़रमाते हैं कि मैं अनेक बार कह चुका हूँ कि तुम आपस में सहमति बनाकर रखो तथा एकत्र होकर रहो, ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को यही शिक्षा दी थी कि तुम एक संयुक्त अस्तित्व रखो अन्यथा हवा निकल जाएगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि आपस में मुहब्बत करो तथा एक दूसरे के लिए उसकी अनुपस्थिति में दुआएँ करो तो यह बहुत बड़ी नेकी है। फ़रमाया कि यदि एक व्यक्ति दूसरे की अनुपस्थिति में दुआएँ करे तो फ़रिश्ता कहता है कि तेरे लिए भी ऐसा ही हो, यदि इंसान की दुआ स्वीकृत न हो तो फ़रिश्ते की तो मंज़ूर होती है। याद रखो कि जब तक तुममें हर एक ऐसा न हो कि जो अपने लिए पसन्द करता है वह अपने भाई के लिए पसन्द करे तो वह मेरी जमाअत में से नहीं, वह यातना तथा कठिनाई में है, उसका परिणाम अच्छा नहीं।

आपने फ़रमाया कि ख़ुदा के साथ मुहब्बत करने का क्या अभिप्रायः है? यही कि अपने माता-पिता, पतनी, संतान तथा अपने अस्तित्व, अर्थात हर चीज़ पर अल्लाह तआला की इच्छा को प्रमुख कर लिया जाए। अतः क़ुर्आन शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला को ऐसा याद करो कि जैसा तुम अपने बापों को याद करते हो बल्कि उससे भी अधिक तथा अत्यंत घोर प्रेम के साथ याद करो। फ़रमाया कि वास्तविक तौहीद को क़ायम करने के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत से पूरा अंश लो और यह मुहब्बत साबित नहीं हो सकती जब तक सम्पूर्ण रूप से उसके आदेशानुसार अमल न किया जाए इस लिए आवश्यक है कि ख़ुदा की राह में अपना जीवन आरक्षित करो और यही इस्लाम है, यही वह उद्देश्य है जिसके लिए मुझे भेजा गया है। अतः जो इस समय इस स्रोत के निकट नहीं आता, जो ख़ुदा तआला ने इस आश्य के लिए जारी किया है, वह निश्चय ही भाग्य हीन रहता है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यही महामान्य निष्ठा थी कि बेटे की क़ुर्बानी के लिए तय्यार हो गया, इस्लाम का यथार्थ यह है कि अनेक इब्राहीम बनाए।

अल्लाह तआला ने इब्राहीम की विशेषता बयान फ़रमाई है कि वे वफ़ादार थे, अतः तुममें से हर एक को कोशिश करनी चाहिए कि इब्राहीम बनो, ख़ुदा तआला धोखा नहीं खा सकता तथा न कोई उसे धोखा दे सकता है, इस लिए आवश्यक है कि सच्ची निष्ठा तथा सत्यता पैदा करा और इसके लिए निरन्तर अल्लाह के द्वार पर झुके रहो तथा अपने हर आने वाले दिन को निष्ठा के साथ ख़ुदा तआला से सम्बंध बढ़ाते चले जाने की कोशिश करने वाला बनाओ।

ख़ूब याद रखो कि पता नहीं मौत किस समय आ जाए किन्तु यह बात पक्की ह कि मौत अवश्य आएगी। अतः केवल दावे पर कदाचित मत रुको और ख़ुश न हो जाओ, वह हरगिज़ हरगिज़ लाभदायक चीज़ नहीं, जब तक इंसान अपने ऊपर अनेक मौतें न आने दे तथा अनेक बदलाव एवं क्रान्तियों में से होकर न निकले, वह इंसानियत के वास्तविक उद्देश्य को नहीं पा सकता। आपने फ़रमाया कि यह बड़ी विचारणीय बात है इसको हल्का न समझो, मुसलमान बनना आसान नहीं है। कितनी लज्जात्मक बात है कि इंसान महामान्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती कहला कर काफ़िरों वाला जीवन व्यतीत करे। अर्थात यह बात अब पूर्णतः समझ में आ सकती है कि अल्लाह तआला का प्रिय होना इंसान के जीवन का लक्ष्य तथा उद्देश्य होना चाहिए क्यूँकि जब तक अल्लाह तआला का प्रिय न हो तथा ख़ुदा की मुहब्बत न मिले, सफल जीवन व्यतीत नहीं कर सकता तथा यह बात पैदा नहीं होती जब तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कर्म से जो इस्लाम सिखाया है तुम वह इस्लाम अपने अन्दर पैदा न करो।

आपने फ़रमाया कि याद रखो कि वह जमाअत जो ख़ुदा तआला क़ायम करनी चाहता है वह अमल के बिना जीवित नहीं रह सकती। यह वह महान जमाअत है जिसकी तय्यारी हज़रत आदम के समय से शुरु हुई। कोई नबी दुनिया में नहीं आया जिसने इस दावत की सूचना न दी हो, अतः इसका सम्मान करो तथा इसका सम्मान यही है कि अपने कर्म से यह साबित करके दिखा दें कि सत्यमार्गियों का गिरोह तुम ही हो। रमज़ान में जो हमने तर्बियत पाई है इसको साल के शेष भागों तथा महीनों में भी जारी रखना होगा। यह जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में एक कार्य-पद्धति मैंने सामने रखो है उसके अनुसार काम करने का भरसक प्रयास करना होगा, अपनी नमाज़ों को संवार कर अदा करना होगा, क़ुर्आन करीम पर अमल करना होगा, एक दूसरे के हक़ अदा करने होंगे, तौहीद के क़याम के लिए हर एक बलिदान देना होगा, तभी हम बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे, अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दुनिया के लिए भी दुआ करें, दुनिया के हालात में सुधार हो। आपस में जो दुश्मनियाँ चल रही हैं, देश दूसरे देशों पर हमले कर रहे हैं, व अक़्ल क नाख़ून लें और इन चीज़ों से रुक जाएँ अन्यथा दुनिया अत्यधिक विनाश की ओर जा रही है। तथा अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को ये पहचान लें तो तभी इससे निकल सकते हैं। इसी प्रकार अहमदी बन्धक जो पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान तथा अलजज़ायर में ह उनके लिए दुआ करें। पाकिस्तान तथा विश्व के कुछ अन्य देशों में अहमदियों के जो हालात हैं उनके लिए दुआ करें, अल्लाह तआला हालात बेहतर करे तथा पाकिस्तान में भी अहमदी स्वतंत्रता पूर्वक रहने लगें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने ख़ुत्बः के अन्त म मुकर्रम अब्दुल बाक़ी अशरफ़ साहब मरहूम के सद्गुणों तथा सिलसिले की सेवाओं का वर्णन फ़रमाने के बाद नमाज़े जनाज़ा हाज़िर अदा किए जाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131